INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 6.865 (SJIF 2023)

राष्ट्र निर्माण में बाल गंगाधर तिलक का योगदान

(Contribution of Bal Gangadhar Tilak in Nation Building)

सचिन कुमार वर्मा
सहायक आचार्य,
शिक्षक शिक्षा विभाग,
धर्म समाज कॉलेज, अलीगढ़

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/11.2023-98169443/IRJHIS2311004

सारांश :

आज हम भारतीय आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। इस आजादी को प्राप्त करने और भारत को एक सकारात्मक ऊर्जा एवं दिशा देने में अनेक महापुरुषों ने योगदान दिया जिसमें बाल गंगाधर तिलक अपने अद्वितीय व्यक्तित्व एवं कृतित्व के लिए जाने जाते हैं। तिलक के विचार आधुनिक भारत की आधारशिला के रूप में स्पष्ट दिखाई देते हैं जैसे तिलक का प्राचीन भारतीय अमूल्य संस्कृति और मूल्यों को महत्व देना, व्यासायिक शिक्षा को प्रोत्सहित करना, शिक्षा हेतु मातृभाषा को महत्व देना, स्वदेशी पर बल, जनता को अधिकारों एवं कर्तव्यों का बोध कराना, स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन और राष्ट्रवाद की भावना का जन जन में विकास करना।

प्रस्तुत शोध आलेख में शोधकर्ता ने शोध के दार्शनिक एवं ऐतिहासिक शोध विधि का प्रयोग करते हुए तिलक के मूल्यवान विचारों को क्रमबद्ध एवं अर्थपूर्ण रूप में व्यक्त किया है जो राष्ट्र निर्माण में तिलक की विचारों के प्रसंगिकता पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द : *स्वराज, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, लोक पर्व, राष्ट्रवाद, कौशलपरक शिक्षा*

प्रस्तावना :

बाल गंगाधर तिलक को प्रायः हम भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रणी आंदोलनकारी एवं गरम दल के नेता के रूप में जानते हैं। यह सत्य एवं सर्वविदित है कि तिलक कि जीवन का एकमात्र लक्ष्य स्वराज और स्वराज ही था जिसको पाने के लिए उन्होंने जीवन पर्यंत संघर्ष किया और अपने अमूल्य कार्य एवं लेखों के माध्यम से मूल्यवान विचारों को प्रकट किया जिनका गहन अध्ययन के उपरांत हम जान सकते हैं की तिलक के विचार तत्कालीन समाज और देश से ही संबंधित नहीं अपितु आधुनिकतम भारत की आधारशिला के रूप में आज भी विद्यमान हैं। शोधकर्ता ने तिलक को अध्ययन करते हुए अपने शोध आलेख को निम्नलिखित रूपरेखा में वर्गीकृत किया है–

1– तिलक का जीवन परिचय

2– तिलक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3– आधुनिकतम भारत में तिलक की प्रासंगिकता

बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई, 1856 को महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में हुआ था। उनके पिता का नाम गंगाधर रामचंद्र तिलक था, जो एक संस्कृत विद्वान थे। तिलक की शिक्षा मुंबई में हुई थी। उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा रत्नागिरी में पूरी की थी, जहां उनके पिता एक शिक्षक थे। बाद में वे मुंबई आए और वहां से उन्होंने अपनी उच्चतर शिक्षा पूरी की। उन्होंने अपनी उच्चतर शिक्षा विश्वविद्यालय में पूरी की। उनका विवाह कम उम्र में ही सत्यभामाबाई नामक स्त्री से हुआ था। उनके परिवार में दो पुत्र रामचंद्र और शंकर, और एक पुत्री नाम केशव हुयी। उनकी पत्नी भी एक सामाजिक कार्यकर्ता थी और वे भी स्वतंत्रता संग्राम में भी सक्रिय रहीं।

बाल गंगाधर तिलक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महानायक थे। उन्होंने भारत को अंग्रजों से आजाद कराने हेतु विभिन्न महत्वपूर्ण कार्य किये जिस कारण उन्हें माण्डले जैसी जेल मे यातनाये भी सही परंतु अपने लेखन के माध्यम से कारावास के समय भी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिये समाज को जागरूक एवं प्रेरित करते रहें।सन् 1896 में 'केसरी' नामक अपने स्वयं का अखबार शुरू किया। इस अखबार के माध्यम से उन्होंने जनता को अपनी बात कहने का मंच दिया।

तिलक ने भारत के स्वाधीनता आंदोलन में एक अहम योगदान दिया। वह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रख्यात नेता थे जिन्होंने अपने जीवन पर्यंत कई उपलब्धियां हासिल की और लोगों को स्वतंत्रता के लिए जागरूक किया। तिलक का नाम लाल, बाल एवं पाल के साथ प्रमुख गर्म दल के नेताओं में प्रसिद्ध था। उनके सर्वमान्य कार्य एव राष्ट्रवादी विचारों से प्रभावित होकर उन्हें लोकमान्य की उपाधि दी गई। तिलक जी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपने दृष्टिकोण और अभिप्राय को उत्कृष्ट ढंग से प्रदर्शित किया। वह आन्दोलन के दौरान लोगों के आंदोलन के प्रभाव को बढ़ाने के लिए एक शक्तिशाली सार्थक और संवेदनशील भाषण देते थे।तिलक जी ने स्वराज्य की मांग को अपनी संगठित व्यवस्था के माध्यम से आम जनता तक पहुंचाने का भी सक्रिय योगदान दिया था। उन्होंने कुछ प्रसिद्ध मुहिमों जैसे शिवाजी जयंती, गणपति उत्सव और दशहरा का आयोजन करवाकर जनता के बीच स्वतंत्रता के लिए जागरूकता फैलाई। तिलक से भयभीत होकर तिलक को अंग्रजो ने माण्डले जेल भेज दिया। उन्होंने अपनी पत्रिकाओं और रचनाओं के माध्यम से सभी भारतीय जन को जागरूक किया और स्वतंत्रता आंदोलन के लिये तैयार किया।

बाल गंगाधर तिलक ने समाज सुधार के कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। तिलक एक ऐसे महान भारतीय नेता थे, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के साथ–साथ समाज सुधार के कार्यों में भी अहम भूमिका निभाई। वह भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के प्रथम नेताओं में से एक थे और उन्होंने जनता के मसीहा के रूप में अपने लोकप्रिय बोलों और लेखों के माध्यम से भारतीय समाज को जागरूक किया और उसे स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया।तिलक ने समाज को अंधविश्वास और गुलामी से मुक्त करने के लिए विभिन्न उपाय अपनाए। उन्होंने एक समाज उत्थान के लिए कुछ विशेष कार्य किए जैसे कि महिला शिक्षा, विधवा दम्पति की सहायता, ग्रामीण विकास, संगठित धर्मिक कार्य आदि। उन्होंने भारतीय समाज को स्वाधीनता के लिए जागरूक करने के लिए भी अनेक अभियान चलाए जैसे स्वदेशी आंदोलन, ब्रिटिश शासन के विरोध में सत्याग्रह आंदोलन, राष्ट्रीय शिक्षा की मांग, आदि। उन्होंने युवाओं को जागरूक करने के लिए विभिन्न संस्थाओं की स्थापना की।

तिलक समाज के निर्माता थे जो स्वतंत्र भारत की आधारभूत संस्कृति, राजनीति और अर्थव्यवस्था के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तिलक का एक महत्त्वपूर्ण समाज सुधार का आंदोलन, तीन अलग–अलग न्यायालयों को समान बनाने के लिए था। उन्होंने इस आंदोलन के माध्यम से दलितों, शोषित वर्गों, और महिलाओं को भी समाज के एक समान अंग के रूप में स्वीकार करने की मुहिम चलाई।

तिलक ने भारतीय समाज के विकास के लिए भी विभिन्न योजनाओं की शुरुआत की, जो समाज के विभिन्न वर्गों के लिए लाभकारी सिद्ध हुईं। उन्होंने किसानों की समस्याओं को हल करने के लिए भूमि सुधार और कृषि उपयोग की तकनीकों पर ध्यान दिया। इस प्रकार, तिलक समाज सुधारक के रूप में न केवल एक उत्कृष्ट राजनेता थे, बल्कि एक महान समाज नेता भी थे जो भारतीय समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

शिक्षा का प्रसारः तिलक जी को शिक्षा के महत्व का बहुत अच्छा ज्ञान था। उन्होंने बालवादी शिक्षा का प्रसार करने के लिए कई उपाय किए। उन्होंने नई दिल्ली में राष्ट्रीय बालिका विद्यालय की स्थापना की और विवेकानंद के सहयोग से वेदांत के आधार पर शिक्षा देने के लिए गुरुकुल स्कूल की स्थापना की। तिलक जी का समाज में स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने का बहुत ही विशेष ध्यान था। उन्होंने इस काम के लिए नाशिक में ''सारस्वत विद्यालय'' की स्थापना की थी, जिससे स्त्रियों को शिक्षित करने में मदद मिलती थी। उन्होंने महाराष्ट्र के लोगों को शिक्षित करने के लिए एक शैक्षणिक संस्था विद्यापीठ की स्थापना की थी। इसके अलावा, उन्होंने विवेकानंद द्वारा शुरू किए गए रामकृष्ण मिशन का समर्थन किया था।

तिलक जी को समाज सुधार के लिए समाज की जरूरतों को समझने और समाधान निकालने में अधिक रुचि थी। उन्होंने महिलाओं के शिक्षा के लिए कई संस्थाओं की स्थापना की, जिनमें से एक महिला महाविद्यालय था। उन्होंने दलितों के लिए भी कई उपाय अपनाए, जिनमें से एक उनकी समाज सेवी संस्था ''श्री दाहिवळी समाज'' थी।

उन्होंने स्वदेशी आंदोलन की भी शुरुआत की थी और भारत की स्वतंत्रता के लिए लोगों को जागरूक करने के लिए अपना अखबार प्रकाशित किया था। उन्होंने अनेक व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए भी कार्य किए थे।बाल गंगाधर तिलक सामाजिक और धार्मिक एकता के समर्थक थे। वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से एक थे और उनका महत्वपूर्ण योगदान उनके समग्र दृष्टिकोण, नेतृत्व कौशल और अपने उत्तरदायित्व के लिए जाना जाता है।

तिलक ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सामाजिक एकता का बढ़ावा दिया। उन्होंने धर्म को एक सामाजिक जागरूकता के माध्यम से फैलाया और लोगों को उनकी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने एकता के लिए संघटना की अपील की और लोगों को अपनी सामाजिक और धार्मिक विरासत के प्रति जागरूक किया। उन्होंने समाज को अपनी विशेषताओं का सम्मान करने की भी अपील की। उन्होंने समाज में असमानता और विभेद को दूर करने के लिए समानता और एकता का संदेश फैलाया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में तिलक की भूमिका सामाजिक और धार्मिक एकता को स्थायी बनाने में महत्वपूर्ण थी।

बाल गंगाधर तिलक ने समाजिक और धार्मिक एकता को बढ़ावा देने में अहम योगदान दिया। वे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अपने संदेश के माध्यम से लोगों में जागरूकता फैलाई और राष्ट्रीय एकता की

अहमियत को समझाया। वे समाज में विभेदों को कम करने के लिए काम करते थे और लोगों को एकजुट होने के लिए प्रोत्साहित करते थे।

तिलक ने सनातन धर्म को भी अपने संदेश के माध्यम से बढ़ावा दिया। उन्होंने धर्म के महत्व को समझाया और धर्म को राष्ट्रीय एकता के लिए एक माध्यम के रूप में पेश किया। वे अपनी ग्रंथ 'गीता रहस्य' में सनातन धर्म के सिद्धांतों को समझाते हुए लोगों को इसकी महत्वपूर्णता को समझाने का प्रयास किया।इस प्रकार, बाल गंगाधर तिलक ने समाजिक और धार्मिक एकता के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दिया।

बाल गंगाधर तिलक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं में से एक थे जो न केवल राजनीति में अपना योगदान दिया बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान किया। वे भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा के विकास के लिए लगातार समर्थन और संघर्ष करते रहे।तिलक ने भारतीय शिक्षा को अंग्रेजों के उपेक्षण और नास्तिकता के कारण उसके मूल्यों से दूर ले जाने का विरोध किया। उन्होंने बाल विद्यालयों की स्थापना और समान शिक्षा के अधिकार के लिए संघर्ष किया। वे शिक्षा को एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में देखते थे जो भारतीय स्वाधीनता की उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। तिलक ने शिक्षा को दो भागों में विभाजित किया था जैसे एक सामान्य शिक्षा और दूसरा व्यावसायिक शिक्षा। उन्होंने शिक्षा को सभी लोगों के लिए समान बनाने के लिए कई कदम उठाए। उन्होंने बाल विद्यालयों की स्थापना के लिए भी प्रयास किए।

बाल गंगाधर तिलक भारत के एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने देश के स्वाधीनता आंदोलन में अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने न केवल राजनीतिक मुकाम हासिल किया था, बल्कि उनकी शिक्षा के विचारों ने एक नई राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तिलक का विचार था कि भारतीय शिक्षा का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना का विकास होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय शिक्षा संस्कृति, धर्म और भाषा के संगम पर आधारित होनी चाहिए। उन्होंने बच्चों के लिए भारतीय भाषाओं में शिक्षा देने का भी सुझाव दिया था। उनका मानना था कि अगर बच्चों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा दी जाएगी तो उनकी भावनाएं और सोच भी अपनी मातृभाषा के संस्कारों से होगी। इसके साथ ही, उन्होंने राजकीय शिक्षा के समान भारतीय संस्कृति और इतिहास के अध्ययन को भी महत्व दिया था। तिलक के यह समस्त शिक्षा संबन्धी विचार वर्तमान राष्टीय शिक्षा नीति में स्पष्ट दिखाई देते हैं।

बाल गंगाधर तिलक भारत के स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं में से एक थे और उन्हें एक साहसी और निर्भीक पत्रकार के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से लोगों को समझाया और जागरूक किया कि जिससे सभी जन स्वतंत्रता की लड़ाई हेतु तैयार हो सकें। तिलक ने स्वराज के प्रति प्रेम उत्पन्न किया और लोगों को सत्य और अपने राष्ट्र की अजादी के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ निडरता से आवाज उठाई और संघर्ष की रणनीति का समर्थन किया। उनकी पत्रकारिता निर्भीक और निडर थी और वे अपने लेखों के माध्यम से लोगों को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करते रहे।

तिलक ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 'केसरी' नामक अपने पत्रिका के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आवाज उठायी। वे अपने लेखों में अपनी सोच को बहुत अच्छी प्रकार से व्यक्त करते थे और उन्होंने लोगों को अंग्रेजो के कुशासन से अवगत कराते थे। तिलक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान स्वतंत्रता सेनानी

थे जिन्होंने स्वतंत्र भारत की स्थापना के लिए जोरदार लड़ाई लड़ी। उनकी पत्रकारिता ने भी उनके स्वतंत्रता आंदोलन में अहम भूमिका निभाई। तिलक ने अपने पत्रकारिता के माध्यम से जनता को सदैच जागरूक एवं संगठित किया और उन्हें अंग्रेजों के अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अंग्रेजी मीडिया के द्वारा जनता को लूटेरों और विद्रोहियों के रूप में दर्शाया जाने से रोकने की कोशिश की।

बालगंगाधर तिलक भारतीय चिंतन परंपरा के महान नेताओं में से एक हैं। उन्होंने भारतीय दर्शन, संस्कृति और धर्म को एक नयी पहचान दिलाने में अहम भूमिका निभाई।तिलक ने वेदों, उपनिषदों और पुराणों जैसी प्राचीन धार्मिक ग्रंथों को अध्ययन किया और उनके मूल्यों और सिद्धांतों का प्रचार किया। उन्होंने भारतीय संस्कृति को संरक्षित रखने के लिए लड़ाई लड़ी और इसके साथ ही उन्होंने विदेशी आक्रमण के खिलाफ आवाज उठायी।तिलक ने भारतीय राष्ट्र की रचना के लिए भारतीय संस्कृति, धर्म और भाषा को महत्वपूर्ण माना। उन्होंने भारतीय राष्ट्र की आत्मगौरव बढ़ाने के लिए भारतीय इतिहास और संस्कृति के महत्व को समझाने का प्रयास किया।

तिलक को भारतीय नैतिकता और दार्शनिक विचारों के प्रतिनिधि के रूप में माना जाता है। उन्होंने भारतीय संस्कृति में धर्म और राजनीति के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन किया और इसे सामाजिक न्याय और स्वतंत्रता से जोड़ा। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय विचारधारा का महत्व बताया और भारतीय जनता के विकास के लिए एक स्वतंत्र विचारधारा के प्रचारक के रूप में अपने आप को सिद्ध किया।

बाल गंगाधर तिलक के लोक पर्वों के आयोजन भारतीय संस्कृति और विरासत के एक महत्वपूर्ण हिस्से हैं। उन्होंने विभिन्न पर्वों के आयोजन के माध्यम से भारतीय जनता को संगठित एवं जागरूक करने का प्रयास किया था। तिलक जी ने गणेश चतुर्थी और शिवाजी जयंती जैसे पर्वों के आयोजन को विशेष महत्व दिया था। इन पर्वों के माध्यम से भारतीय लोग अपने संस्कृति और धर्म को समझते थे और उन्हें एक साथ आनंद उठाने का अवसर मिलता था। इन पर्वों का आयोजन समाज को एक साथ रखने के साथ–साथ उन्हें अपनी संस्कृति और धर्म के प्रति उत्साहित करता था। इन पर्वों के आयोजन से लोगों के बीच सामाजिक सम्बन्धों एवं आपसी प्रेमे में बढ़ोतरी होती थी। तिलक ने इन पर्वों के आयोजन से भारतीय जनता के आत्मविश्वास में बढ़ोतरी की थी और उन्हें देश और समाज के लिए सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया था। तिलक का मुख्य लक्ष्य जनमानस को संगठित कर स्वराज के लिये तैयार करना था।

बाल गंगाधर तिलक ने न केवल राजनीतिक लोकतंत्र के लिए संघर्ष किया बल्कि उनके शिक्षण–प्रणाली में भी बदलाव लाने के लिए प्रयास किए। तिलक ने शिक्षा के महत्व को समझा और उन्होंने भारतीय जनता को शिक्षित करने के लिए जीवनभर लड़ाई लड़ी। उन्होंने शिक्षा को अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा माना और उन्होंने शिक्षा के माध्यम से जनता को अधिकारों के बारे में जागरूक करने का प्रयास किया। तिलक ने महात्मा फुले द्वारा शुरू की गई ''शिक्षा जगतु'' नामक एक संस्था का भी संस्थापन किया था जो गरीब बच्चों को मुफ्त में शिक्षा प्रदान करती थी। उन्होंने भारत के राष्ट्रीय शिक्षा नीति को संशोधित करने के लिए भी प्रयास किए थे।

बाल गंगाधर तिलक एक ऐसे महान शिक्षक थे जो भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के नेतृत्व में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। वह न केवल भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं में से एक थे, बल्कि एक प्रख्यात शिक्षाविद भी थे। तिलक ने शिक्षा को अपनी जीवन की एक प्राथमिकता बनाया था। उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी

भाषा में उपलब्ध अनेक ग्रंथों के अध्ययन से अपनी शिक्षा को समृद्ध किया था। उन्होंने भारत की नैतिक और सांस्कृतिक धरोहरों को संजोए रखने के लिए शिक्षा के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया। तिलक ने महाराष्ट्र में आधुनिक शिक्षा के विकास के लिए भी अपना योगदान दिया। वह नागपुर विश्वविद्यालय के संस्थापकों में से एक थे और अपने जीवन के अंतिम दिनों तक वह उसके विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे।

बाल गंगाधर तिलक एक महान शिक्षक थे जो भारतीय इतिहास में एक अहम रूप से याद किए जाते हैं। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत से कार्य किए थे।तिलक ने अपने जीवन के दौरान शिक्षा के महत्व को बताया और लोगों को शिक्षा के लाभों के बारे में जागरूक किया। उन्होंने अपनी शिक्षा के समय आधुनिक शिक्षा पद्धति का उपयोग करते हुए शिक्षा का अध्ययन किया था।तिलक ने मुंबई में एक शिक्षा संस्था भी स्थापित की थी जिसका नाम ''दीक्षा शिक्षण संस्था'' था। इस संस्था में वे लोगों को शिक्षा देते थे जो विभिन्न वर्गों से थे। तिलक ने भारतीय संस्कृति के महत्व को समझने और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने को भी बढ़ावा दिया। उन्होंने भारत की विरासत को संजोने के लिए लोगों को प्रेरित किया।

तिलक के अमूल्य विचारों एवं कार्यो के अध्ययन से ज्ञात हो जाता है कि उनके विचार और कार्य वर्तमान भारत की आधारशिला के रूप में आज भी विद्यमान हैं। तिलक ने सदैव भारतीय संस्कृति और मूल्यों को महत्व दिया और भारतीय शिक्षा के माध्यम से इसकी समृद्धि हेतु प्रयास किया। उन्होंने कौशलपरक शिक्षा को महत्व दिया जिससे भारतीय जन स्वावलंबी बने। उन्होंने स्वदेशी एवं कौशलपरक शिक्षा के माध्यम से विदेशी शासन की आर्थिक हानि कर उनकी कमर तोडने का प्रयास किया। आज भी आधुनिक भारत का महत्व स्वदेशी वस्तुओं के उत्पादन पर रहता है जिसकी सर्वाधिक जागरूकता तिलक द्वारा आजादी से पहले जनता में फैलायी गयी।वर्तमान में भारत सरकार को प्रयास कौशल के विकास और व्यावसयिक शिक्षा पर है ताकि देश मानव संपदा के रूप में इस बडी जनसंख्या का लाभ अपने को विकसित करने में ले सके इसीलिये राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इसे विशेष स्थान दिया गया है। तिलक ने शारीरिक शिक्षा का भी प्रोत्साहन किया था जो वर्तमान शिक्षा नीति में भी विद्यमान हैं। तिलक ने सदैव जनता को मानव अधिकारों एवं कर्तव्यों का बोध कराया और विभिन्न लोक पर्वो के माध्यम से जनता को संगठित किया। आजादी से पूर्व के तिलक के समस्त विचारों को आधुनिकत भारत की समृद्धि एवं विकास हेतु नियोजित सभी योजनाओं एवं कार्यक्रमों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। तिलक आज 21 वीं सदी में भी एक कुशल शिक्षाविद, महान राष्ट्रवादी स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक,राष्ट्र निर्माता एव पुरातन भारतीय संस्कृति के संरक्षक एवं वाहक के रूप में आज भी आधुनिकतम भारत में प्रासंगिक हैं।

संदर्भ सूची :

1. शर्मा, मधु बाला. (2010). बाल गंगाधर तिलक के समाज सुधारक विचारों का विश्लेषण. जयपुर, संगणेरिया यूनिवर्सिटी
2. महेश्वरी, महेश चन्द्र. (2008). बाल गंगाधर तिलक एवं समाज सुधार, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर
3. देव, सुधीर. (2019). बाल गंगाधर तिलकः समाज सुधार और राष्ट्रनिर्माण, जमिया मिलिया इस्लामिया

4. श्रीवास्तव, अरविन्द कुमार. (2016). बाल गंगाधर तिलक के समाज सुधारक के विचारः एक अध्ययन, अखिल भारतीय गांधी विद्यापीठ
5. प्रजापति, सुभाष कुमार. (2017). बाल गंगाधर तिलक के समाज सुधारक विचारः एक ऐतिहासिक अध्ययन, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
6. त्रिपाठी, राजेश. (2017). बाल गंगाधर तिलकः राष्ट्र निर्माता दर्शन और समाजवादी चिंतन, दिल्ली विश्वविद्यालय
7. पांडेय, शंकरलाल. (2019). बाल गंगाधर तिलकः एक राष्ट्रनिर्माता का दर्शन, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
8. चौधरी, अमरनाथ. (2018). बाल गंगाधर तिलक का दृष्टिकोणः राष्ट्र निर्माता के रूप मे, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
9. गुप्ता, राजीव. (2004). बाल गंगाधर तिलकः भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के महान सेनानी. नई दिल्लीः अखिल भारतीय इतिहास संस्थान।
10. अधिकारी, अरुण. (2015). बालगंगाधर तिलक के शैक्षणिक विचार. विश्वविद्यालयीन शोध पत्रिका, 25(2), 125–132.
11. शर्मा, अमित. (2011). बालगंगाधर तिलक एवं उनके शिक्षा दर्शन. विद्यार्थी अध्ययन एवं अनुसंधान जर्नल, 1(2), 20–26.
12. मेहंदीरत्ता, डॉ. कुलदीप.(2022).लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का शिक्षा दर्शन. राष्ट्रीय शिक्षा https://rashtriyashiksha.com/education-philosophy-of-lokmanya-bal-gangadhar-tilak/